Evolution — विकासवाद के अनुसार विश्व की रचना किसी के द्वारा एक ही बार में गई है, ऐसा नही मानता। इनके अनुसार विश्व का वर्तमान स्वरूप अनेकों वर्षों के क्रमिक विकास का परिणाम है। विकास का अर्थ परिवर्तन है और परिवर्तन आमतौर पर सरल से जटिल की ओर होता गया, यद्यपि कुछ विकासवादियों का यह मत भी है कि यह परिवर्तन हमेशा सरल से जटिल की ओर ही नही हुआ बल्कि जटिल से सरल की ओर भी हुआ है। विश्व की सारी विविधताएँ एक ही बार में उत्पन्न हुई बल्कि कालक्रम से उत्पन्न हुई और उसका क्रमिक विकास हुआ। विकासवाद का सिद्धांत वैज्ञानिक अनुसंधानों पर आधारित है, जो हमे जानकारी देता है कि पृथ्वी की उत्पत्ति एकाएक नही हुई पहले केवल आग का एक जलता हुआ गोला था जो धीरे-धीरे ठंडा होकर पृथ्वी में परिवर्तित हुआ।

विकास की यह प्रक्रिया कैसे चलती है यानि किन सामान्य विधियों के द्वारा अग्रसर होती है। इस सम्बन्ध में पाश्चात्य विद्वान स्पेन्सर ने तीन बातें बतलायी है, जिन्हे विकास क्रम के

तीन प्रमुख लक्षण कह सकते हैं ये हैं —— (a) संयोजन, (b) विभाजन तथा (c) निर्धारण व्यवस्थी पन इन्ही तीन प्रक्रियाओं के माध्यम से विकास क्रम चलता है। संयोजन विकास क्रम की सारी संभावना एक साथ संयोजित करती है। काल क्रम से इस संयोजन में विभाजन या विघटन प्रारंभ होता है। एक अनेकों में टूटता है इसलिए आम-तौर पर विकास क्रिया एकता से अनेकता की ओर अग्रसर होती हुई समझी जाती है परन्तु यह विभाजन या विघटन अव्यवस्थित रूप में जैसे-तैसे बिखरा नही रहता बल्कि उसका व्यवस्थापन होता है और व्यवस्थित होकर वह कुछ नवीन तथ्य को जन्म देता है।

इस प्रकार यदि हम सृष्टिवाद और विकासवाद का परस्पर मूल्यांकन करे तो हम पाते हैं कि सृष्टिवाद विश्व की उत्पत्ति के सम्बन्ध में एक बड़ा ही सरल सिद्धांत है। जो सामान्य व्यक्ति को आकर्षित करता है परन्तु इस सिद्धांत की मान्यता तब अधिक थी जब लोग अधिकांशतः धार्मिक प्रवृत्ति के होते थे। जैसे-जैसे मनुष्य का बौद्धिक विकास होता गया और वैज्ञानिक दृष्टि से देखने की उसकी क्षमता बढ़ती गई, वैसे

वैसे ईश्वरवाद और सृष्टिवाद की मान्यताओं पर उसका संदेह बढ़ने लगा और विकासवाद की ओर उसका आर्थिक आकर्षण होने लगा। सृष्टिवाद के संबंध में बहुत सी ऐसी बातें हैं जो उसके पक्ष में नहीं जाती जैसे सृष्टिवाद के सम्बन्ध में बहुत सी ऐसी बातें हैं जो उसके पक्ष में नहीं जाती जैसे सृष्टिवाद ईश्वर को विश्व का सृष्टिकर्ता मानता है किन्तु ईश्वर के अस्तित्व के सम्बन्ध में कोई ठोस प्रमाण नहीं मिलता।